ResearchPro International Multidisciplinary Journal

Vol- 1, Issue- 2, October-December 2025 ISSN (O)- 3107-9679

Email id: editor@researchprojournal.com Website- www.researchprojournal.com

परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता, समायोजन क्षमता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

रीता यादव

शोधार्थी शिक्षाशास्त्र, जे.एस. विश्वविद्यालय शिकोहाबाद (फिरोजाबाद), उ0प्र0

डॉ. कमलेश कुमार यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर शिक्षाशास्त्र विभाग, जे.एस. विश्वविद्यालय शिकोहाबाद (फिरोजाबाद), उ0प्र0

सारांश

शोध पत्र का उद्देश्य परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता, समायोजन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम भावी शिक्षकों को अच्छा एवं प्रभावशाली बनाने का एक अच्छा ढंग है जिससे भावी पीढ़ी को इस प्रकार शिक्षित किया जा सके कि वह अच्छे एवं उत्पादक नागरिक बना सकें। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य भावी शिक्षकों की शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति, सकारात्मक आत्म प्रत्यय एवं मानव जीवन में संबंधित मूल्य को विकसित करके उनके व्यवहार में इस प्रकार परिवर्तन लाना होता है, जिससे वह राष्ट्रीय शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति करने में सफल हो सकें। चूँकि शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना होता है और उसका केन्द्र बिन्दु भावी शिक्षक ही होते हैं। अतः बालक के विकास उन्नति तथा सफलता काशोध अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के रूप में 200 बी.एड. प्रशिक्षुओं का चयन आकस्मिक प्रतिदर्श द्वारा किया गया है। बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता के मापन हेतु 'बी.के. पासी एवं एम.एस ललिथा' द्वारा निर्मित 'जनरल टीचिंग कॉम्पीटेन्सी स्केल' का प्रयोग किया गया। प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण के सन्दर्भ में मध्यमान, मध्यांक, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात तथा टी परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषणोपरान्त यह पाया गया कि महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता एवं समायोजन में (0.01) स्तर पर सार्थक अन्तर है अर्थात् महाविद्यालय के बी.एड. प्रशिक्षुओं में शिक्षण दक्षता अध्कि होती है परन्तु उनकी शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। इसी प्रकार उच्च एवं निम्न तथा औसत एवं निम्न शिक्षण दक्षता वाले बी.एड. प्रशिक्षुओं की समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है लेकिन उच्च एवं औसत शिक्षण दक्षता वाले बी.एड. प्रशिक्षुओं की समायोजन में (0.05) सार्थक अन्तर दृष्टिगोचर होता है।

की–वर्डः परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा, प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षु, शिक्षण दक्षता, समायोजन एवं अभिवृत्ति।

प्रस्तावनाः

किसी समाज एवं राष्ट्र का विकास उस समाज तथा राष्ट्र के प्रबुद्ध नागरिकों से निर्धारित होता है। राष्ट्र के लिए प्रबुद्ध नागरिकों को तैयार करने की जिम्मेदारी उस राष्ट्र के शिक्षक वर्ग का होता है। शिक्षक एक अबोध बालक को अपने ज्ञान एवं प्रभाव से एक प्रबुद्ध नागरिक के रूप में विकसित करता है। किसी भी

बालक–बालिका को उसके माता–पिता जन्म अवश्य देते हैं परन्तु इस संसार से बालक–बालिका का साक्षात्कार, एक शिक्षक ही कराता है। शिक्षक के पास ज्ञान रूपी उपकरण होता है जिसके माध्यम से वह अपने छात्र–छात्राओं का शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सामाजिक विकास, सांस्कृतिक विकास एवं सर्वांगीण विकास करता है। परन्तु किसी भी अबोध बालक को प्रबुद्ध नागरिक के रूप में एवं उसका सर्वांगीण विकास वहीं शिक्षक कर सकता है जिसने खुद को ज्ञान रूपी भट्टी में जलाया हो। शिक्षकों के संदर्भ में एक प्राचीन कहावत है कि शिक्षक बनाए नहीं जाते बल्कि जन्मजात होते हैं। परन्तु आज के मनोवैज्ञानिक समय ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि जितनी आवश्यकता एक शिक्षक को विषय का ज्ञानी होना जरूरी है, उतनी ही उस शिक्षक का शिक्षण संबंधी कला एवं विज्ञान को भी जानना जरूरी है।

आज के समय में मनोवैज्ञानिक खोजों ने एक बात स्पष्ट कर दिया है कि प्रत्येक छात्र–छात्रा में व्यक्तिगत विभिन्नता में पाई जाती हैं, इसलिए किसी भी शिक्षक को अपने विषय के ज्ञाता होने के साथ–साथ उसे शिक्षण शास्त्र एवं मनोविज्ञान का ज्ञान होना अति आवश्यक है। इन्हीं मनोवैज्ञानिक खोजों ने प्राचीन समय से चली आ रही धारणा कि शिक्षक जन्मजात होते हैं, को अपूर्ण साबित कर दिया है। अतः जन्मजात शिक्षण क्षमता होने के साथ–साथ भी किसी भी अध्यापक को प्रशिक्षण की अत्यधिक आवश्यकता होती है जिसके माध्यम से शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में और अधिक धार अर्थात शिक्षण कला में और अधिक पारंगत होते हैं। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक रायबर्न ने शिक्षण के अंतर्गत तीन मुख्य बिन्दुओं को स्वीकार किया है जिसे शिक्षक, विद्यार्थी और पाठ्यक्रम के नाम से जाना जाता है। अपने इस विचार में रायबर्न ने स्पष्ट किया कि यदि किसी भी प्रकार के शिक्षण प्रक्रिया को संचालित करना है तो वहां इन तीन बिन्दुओं का उपस्थित होना अनिवार्य है क्योंकि इनमें से किसी एक की भी अनुपस्थिति में शिक्षण प्रक्रिया को संचालित करना असंभव होता है।

वर्तमान समय के वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास ने शिक्षा प्रणाली में अनेक परिवर्तन ला दिए हैं। प्राचीन समय में शिक्षा के विषय वस्तु के रूप में केवल धार्मिक एवं सांस्कृतिक विषयों को शामिल किया जाता था परन्तु शिक्षा में अनेक नए–नए विषयों को भी शामिल किया जा रहा है जिस कारण इन नए विषयों एवं पहले से प्रचलित विषयों के नए स्वरूप को वास्तविकता के साथ प्रकट करने एवं छात्रों को उचित ढंग से समझने योग्य बनाने के लिए एक शिक्षित एवं प्रशिक्षित शिक्षक की आवश्यकता होती है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति किसी भी शिक्षक को प्रशिक्षण देकर पूरा किया जा सकता है, क्योंकि प्रशिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया होती हैं, जिसके अंतर्गत किसी भी व्यक्ति को उसके व्यवहारिक एवं क्रियात्मक पक्ष को इस तरह से प्रस्तुत करना सिखाया जाता है। जैसे कि एक कलाकार को यह सिखाया जाए कि उसे कब और कैसे अपने रंगों का प्रयोग करके एक अद्वितीय चित्र बनाना है। इसी प्रकार शिक्षकों को भी प्रशिक्षण देकर एक अबोध एवं कमजोर बच्चों को एक सशक्त और गुणवान नागरिक के रूप में विकसित करने की कला सिखाई जाती है।

अतः उपरोक्त वर्णित तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यदि किसी भी समाज एवं राष्ट्र को शिखर तक ले जाना है तो सर्वप्रथम वहाँ की शिक्षा को सुदृढ़ करना आवश्यक है। शिक्षा को सुदृढ़ करने में सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु शिक्षकों के उचित प्रशिक्षण एवं उनके ज्ञान का परिमार्जन आवश्यक होता है। इस प्रकार शिक्षकों को प्रशिक्षित करके हम अपने राष्ट्र के विद्यार्थियों को विभिन्न वैज्ञानिक, तकनीकी, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों के विद्वान के रूप में तैयार कर सकते हैं। यही विद्यार्थी हमारे राष्ट्र के नीव को अत्यधिक मजबूती के साथ निर्मित करेंगे। इसलिए हमें शिक्षक के महत्व एवं उनके प्रशिक्षण को उचित तरीके से नियोजित करना आवश्यक है। क्योंकि वर्तमान में हमारे देश में अनेकों प्रशिक्षण संस्थाएं लाखों की संख्या में शिक्षकों को प्रशिक्षित कर तो रही हैं परन्तु ज्यादातर प्रशिक्षण संस्थाओं में सुविधाओं एवं संसाधनों की कमी के कारण शिक्षकों के प्रशिक्षण में बाधा उत्पन्न होती रहती है। जिस कारण प्रशिक्षणार्थियों मैं गुणों एवं विशेषताओं का विकास उचित प्रकार से नहीं हो पा रहा है जो कि एक शिक्षक के. लिए आवश्यक होती है। इसी अवधारणा को लेकर शोधार्थी ने परम्परागत और दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता एवं समायोजन क्षमता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहा है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्वः

भारतीय शिक्षा परम्परा में अंग्रेजों के आने के साथ ही सन 1793 से ही अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण संस्थाओं की स्थापना प्रारंभ हो गई थी। परन्तु उस समय देश अंग्रेजों का गुलाम था जिस कारण जो भी प्रशिक्षण संस्थायें स्थापित की गई थी वह सब अंग्रेजी अर्थात ब्रिटिश शिक्षण पद्धति पर आधारित थी। स्वतंत्रता

प्राप्ति के समय भारत में 649 प्रशिक्षण संस्थान स्थापित हो चुके थे। प्रशिक्षण संस्थानों की संख्या में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात तेजी से विकास हुआ है। प्रशिक्षण संस्थानों की संख्यात्मक वृद्धि तीव्र गति से हुई परन्तु इन संस्थानों में गुणात्मक वृद्धि की गति मंद पड़ती गई। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात यू.जी.सी., एनसीईआरटी, एनसीटीई, एससीईआरटी जैसी अनेक संस्थानों की स्थापना की गई जिसके माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के गुणात्मक उन्नयन के लिए अनेक नियम एवं प्रावधान तैयार किए गए हैं। फिर भी प्रशिक्षण संस्थानों में गुणात्मक विकास को उच्च स्तर तक पहुँचाना संभव नहीं हो पाया है। बीसवीं शताब्दी के सातवें दशक में दुनियाभर के विकसित देशों ने दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का विकास आरम्भ किया। भारत में भी दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को मान्यता प्राप्त हुई, जिसमें स्नातक, स्नातकोत्तर एवं अन्य डिप्लोमा कोर्स के साथ ही शिक्षक प्रशिक्षण कोर्स को भी मान्यता दे दी गयी है।

वर्तमान समय में परम्परागत प्रशिक्षण संस्थान के साथ ही साथ दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से भी शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करने का कार्यक्रम चल रहा है। परन्तु परम्परागत और दूरस्थ शिक्षा के प्रशिक्षण कार्यक्रम में अनेक भिन्नता है, जहाँ परम्परागत संस्थानों में प्रशिक्षण कार्यक्रम दिन–प्रतिदिन निर्धारित क्रियाकलापों के द्वारा संचालित किया जाता है वही दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन सप्ताह में एक बार अथवा महीने में एक बार संचालित किया जाता है। दोनों प्रकार के प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भिन्नता के कारण इनके प्रशिक्षणार्थियों में विकसित होने वाले विभिन्न शैक्षिक गुणों में भिन्नता पाई जाती है अथवा नहीं. इन अलग–अलग संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त प्रशिक्षणार्थियों के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान कैसा है। इस बातों को समझने के लिए शोधार्थी अपने शोध के विषय के रूप में परंपरागत और दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता, समायोजन क्षमता तथा शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस हुई।

समस्या कथनः

''परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता एवं समायोजन क्षमता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''

शोध में प्रयुक्त पदों की संक्रियात्मक परिभाषाएँः

- परम्परागत शिक्षाः शिक्षण की ऐसी व्यवस्था जिसमे शिक्षक और शिक्षार्थी औपचारिक ढंग किसी निश्चित संस्थान में आमने–सामने उपस्थित होकर शिक्षा का आदान–प्रदान करते हैं.। इस शिक्षा पद्धति में शिक्षार्थी अपनी शिक्षा सम्बन्धी समस्यायों का समाधान करने के लिए पूरी तरह से अपने शिक्षक पर निर्भर होता है तथा शिक्षक, शिक्षार्थी की समस्या का समाधान तात्कालिक रूप से प्रस्तुत करता हैं।
- दूरस्थ शिक्षाः दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा की वह व्यवस्था हैं जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य कोई निश्चित सम्बन्ध नहीं होता हैं। शिक्षार्थी इन संस्थाओं में प्रवेश लेने के पश्चात् अपने सुविधानुसार शिक्षण करता हैं इसमें शिक्षक की कोई भूमिका नहीं होती हैं। इसमे शिक्षार्थी की शिक्षण सम्बन्धी समस्या के समाधान के लिय विभिन्न तकनीकी उपकरणों की सहायता ली जाती हैं, अर्थात शिक्षा की इस पद्धति की कोई भौतिक स्वरूप नहीं होता है।
- बी.एड. प्रशिक्षणार्थीः ऐसे शिक्षार्थी जो स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् शिक्षण कार्य करने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे होते हैं, उसके पश्चात् विद्यार्थियों को एक शिक्षक के रूप में मान्यता प्राप्त होती है तत्पश्चात ये शिक्षक शिक्षण कार्य करने के योग्य हो जाते हैं।
- शिक्षण दक्षताः शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् किसी भी शिक्षार्थी में शिक्षण कार्य करने की कितनी क्षमता का विकास हुआ है, वही उस विद्यार्थी की शिक्षण दक्षता कहलाती है।
- समायोजन क्षमताः किसी भी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् शिक्षार्थी द्वरा अपने सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक परिवेश में अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए परिस्थितियों को कितना अनुकूल बनाता हैं या परिस्थितियों के अनुकूल कितना हो जाता हैं, वही उस विद्यार्थी की समायोजन क्षमता होता हैं।
- अभिवृत्तिः किसी शिक्षार्थी द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् शिक्षण की विभिन्न पहलुओं के प्रति उसमें निर्मित वे मनोभाव जो शिक्षार्थी का उनके अपने शिक्षण अनुभव, विचार एवं धारणाओं से निर्देशित होते हैं।

शोध अध्ययन के उद्देश्यः प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है–

1. परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँः शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध को अधोलिखित परिकल्पनाओं के अन्तर्गत सम्पादित किया–

1. परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं होता है।
3. परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।

सम्बन्धित साहित्य

सामंती राय (2015) ने शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा शिक्षक कार्यक्षमता से इसके सम्बन्ध में एक अध्ययन किया। इस अध्ययन में 320 स्नातकों में 258 पुरुषों तथा 62 महिलायें थीं। कई वर्ग परीक्षण ने यह प्रदर्शित किया कि इन दोनों चरों में कुल सीमा तक धनात्मक सह सम्बन्ध था दूसरे शब्दों में उच्च कार्य क्षमता तथा निम्न कार्य क्षमता तथा अभिवृत्ति साथ–साथ पायी जाती है तथा निम्न कार्य क्षमता तथा अभिवृत्ति के बीच विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है। इस अध्ययन में भी ज्ञात किया गया है कि सामंजस्य और शिक्षण क्षमता में धनात्मक सह सम्बन्ध पाया जाता है। जिसका तात्पर्य यह हुआ कि जिसमें उच्च कार्य क्षमता होगी उसमें अच्छा सामंजस्य होगा तथा विपरीत दिशा में सामंजस्य अच्छा नहीं होगा। निवास, राम (2017) ने बी.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया और पाया कि बी.एड. छात्राध्यापकों की सामान्य शिक्षण दक्षता की अंतर्वैक्तिक स्थिति में अपेक्षित अंतर पाया गया। जिनमें अधिकांश छात्राध्यापक शिक्षण कौशलों, दक्षता स्तर में औसत से अधिक स्तर के पाए गये। अधिकांश बी.एड. छात्राध्यापकों में सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति की अंतर्वैक्तिक स्थिति में सकारात्मक मनोवृत्ति पाई गयी और छात्राध्यापकों द्वारा अध्यापन कुशलता के लिए रचनात्मक क्रियाकलापों का उपयोग किया जाता हैं।

पासी और शर्मा (2018) ने माध्यमिक स्कूल के अध्यापकों की शिक्षण दक्षता पर अध्ययन किया, जिसके निष्कर्ष रूप में पाया कि लगभग 70–80 प्रतिशत लोगों के विचार से दक्षता निम्न माध्यमों से पहचानी जाती है। महिला भाषाध्यापिका एवं पुरूष भाषाध्यापकों की शिक्षण दक्षता अलग–अलग नहीं होती है। भाषा अध्यापकों की आय तथा शिक्षण दक्षता के बीच धनात्मक सहसम्बन्ध होता है। शिक्षक की उपलब्धि और उसकी शिक्षण दक्षता में सार्थक ऋणात्मक सह सम्बन्ध है। प्राथमिक विद्यालयों में विशिष्ट बी0टी0सी0 तथा बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों की योजना सरकार की एक नई योजना है। उपर्युक्त सर्वेक्षणों से स्पष्ट होता है कि विशिष्ट बी0टी0सी0 और बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण दक्षता पर शोध कार्य अभी नहीं हुआ है। अतः इस पर विषय अध्ययन की आवश्यकता को उचित समझा गया है। बहादुर, ऋषिकेश (2019) ने गैर–सरकारी महाविद्यालयों में बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करके पाया कि गैर–सरकारी महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की पाठ्यक्रम के प्रति नकारात्मक की अभिवृत्ति हैं। मिश्रा, अर्चना (2020) ने केन्द्रीय तथा राजकीय विद्यालयों के अध्यापकों की समायोजन क्षमता तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में 150 अध्यापक केन्द्रीय विद्यालय के तथा 150 अध्यापक राजकीय विद्यालयों से लिए गये। इस अध्ययन में निष्कर्ष रूप में पाया कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की अपेक्षा केन्द्रीय विद्यालयों के अध्यापकों की समायोजन क्षमता अधिक होती है जबकि पुरुष एवं महिला अध्यापकों की समायोजन क्षमता पर ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र का प्रभाव पड़ता है तथा राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की अपेक्षा केन्द्रीय विद्यालयों के

अध्यापकों का आकांक्षा स्तर अधिक है। श्रीवास्तव, पंकज (2020) ने माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और शिक्षण दक्षता का अध्ययन किया और शिक्षण दक्षता से सम्बन्धित पांच उद्देश्य बनाये। इस अध्ययन में चार प्रकार के विद्यालय लिये गये (1) राजकीय विद्यालय (2) वित्तपोषित विद्यालय (3) केन्द्रीय विद्यालय (4) अंग्रेजी माध्यमिक विद्यालय। शिक्षण दक्षता के मापन हेतु बी0के0 पासी एवं एम0एस0 ललिथा के शिक्षण दक्षता परीक्षण नामक उपकरण का प्रयोग किया। अध्ययन के उपरान्त यह पाया कि व्यावसायिक संतुष्टि का प्रभाव उनकी शिक्षण दक्षता पर पड़ता है। अध्ययन में केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षक अधिक व्यावसायिक रूप से संतुष्ट पाये गये। अतः उनकी शिक्षण दक्षता भी अधिक पायी गयी।

शोध विधिः प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थिनी द्वारा वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है, क्योंकि यह एक मनोवैज्ञानिक विधि होती है। इस विधि द्वारा प्राप्त प्रदत प्रमाणित व विश्वसनीय होते हैं तथा इनकी सत्यता भी अभीष्ट होती है।

शोध के चरः

स्वतंत्र चर– परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षार्थी

आश्रित चर– शिक्षण दक्षता, समायोजन क्षमता एवं शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति।

जनसंख्याः इस शोध पत्र को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए शोधार्थिनी द्वारा प्रयागराज जनपद में स्थित परम्परागत व दूरस्थ शिक्षा प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों को जनसंख्या के रूप परिभाषित किया।

प्रतिदर्शः प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थिनी द्वारा प्रयागराज जनपद के 10 परम्परागत प्रशिक्षण संस्थान व दूरस्थ शिक्षा के 2 प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे क्रमशः 100–100 प्रशिक्षणार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया है।

शोध के उपकरणः प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित शोध उपकरण का प्रयोग किया –

1. इस शोध में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता को मापने के लिए ड'बी.के. पासी एवं एम.एस ललिथा' की प्रमापीकृत शिक्षण दक्षता मापनी का प्रयोग किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध पत्र में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की समायोजन क्षमता को मापने के लिए डॉ०एस०के० मंगल द्वारा रचित एवं प्रमाणीकृत शिक्षक समायोजन अनुसूची का प्रयोग किया।
3. प्रस्तुत शोध पत्र में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति संबंधित स्वनिर्मित अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी विधियांः

प्रस्तुत शोध अध्ययन में एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए निम्नवत् सांख्यिकी मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन

महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण–अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु सर्वप्रथम उक्त दोनों प्रकार के महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात मान की गणना की गई।

परिकल्पना–1: परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका–1

परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात मान

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
परम्परागत शिक्षा	100	82.0	16.8	6.25	<.01 सार्थक
दूरस्थ शिक्षा	100	68.8	13.7		

व्याख्या

तालिका–1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षित महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर है क्योंकि दोनों ही समूहों की शिक्षण दक्षता सम्बन्धी मध्यमान मूल्यों में अन्तर है। इस प्रकार कह सकते हैं कि प्रशिक्षित महाविद्यालय के बी.एड. प्रशिक्षु महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की तुलना में श्रेष्ठ हैं। उपर्युक्त दोनों समूहों में जो अन्तर परिलक्षित हो रहा है वह सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है या नहीं, इस अध्ययन हेतु दोनों समूहों के शिक्षण दक्षता सम्बन्धी क्रान्तिक अनुपात मान की गणना की गई है। उपर्युक्त तालिका में प्रदर्शित क्रान्तिक अनुपात मान (6.25) 0.01 स्तर पर सार्थक है जो इस बात का संकेत करता है कि दोनों ही समूहों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर है। यदि देखा जाये तो परम्परागत महाविद्यालयों में वे छात्रों चयनित होकर आते हैं जो चयन प्रक्रिया में उच्च स्थान प्राप्त करते हैं इसलिए इन छात्रों में शिक्षण दक्षता का अधिक होना स्वाभाविक है। इसके विपरीत दूरस्थ महाविद्यालयों के छात्रों में शिक्षण दक्षता कम पाई जाती है।

बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण–दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन

परम्परागत एवं दूरस्थ महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु सर्वप्रथम उक्त दोनों प्रकार के महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात मान की गणना की गई।

परिकल्पना–2: परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका–2

परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की समायोजन क्षमता सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात मान

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
परम्परागत शिक्षा	100	118.3	16.0	1.66	<.05 असार्थक
दूरस्थ शिक्षा	100	114.9	12.7		

तालिका–2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि दोनों ही समूहों की समायोजन संबन्धी मध्यमान मूल्यों में अन्तर नहीं है तथा दोनों ही समूहों की समायोजन क्षमता सम्बन्धी मध्यमान प्राप्तांकों के मध्यमान में जो अन्तर दृष्टिगोचर हो रहा है वह सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि संयोगजन्य त्रुटियों के कारण से उत्पन्न हुआ है क्योंकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात .05 स्तर पर असार्थक है। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षु समान समायोजन क्षमता रखते हैं।

परिकल्पना–3: परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका–3

परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात मान

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
परम्परागत शिक्षा	100	82.3	16.8	6.23	<.01 सार्थक
दूरस्थ शिक्षा	100	67.8	12.9		

तालिका–3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि दोनों ही समूहों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति संबन्धी मध्यमान मूल्यों में अन्तर नहीं है तथा दोनों ही समूहों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति सम्बन्धी मध्यमान प्राप्तांकों के मध्यमान में जो अन्तर दृष्टिगोचर हो रहा है वह सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि संयोगजन्य त्रुटियों के कारण से उत्पन्न हुआ है क्योंकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात .05 स्तर पर असार्थक है। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षु शिक्षण के प्रति समान अभिवृत्ति नहीं

रखते हैं।

वर्तमान शोध पत्र में परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता तथा समायोजन क्षमता सम्बन्धी परीक्षण से प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि उक्त दोनों समूहों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर है किन्तु उनकी शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसी प्रकार उच्च एवं निम्न तथा औसत एवं निम्न समायोजन वाले बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। लेकिन उच्च एवं औसत शिक्षण दक्षता वाले बी.एड. प्रशिक्षुओं की समायोजन क्षमता में (0.05) सार्थक अन्तर दृष्टिगोचर होता है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षण के सभी प्रकार वाले बी.एड. प्रशिक्षुओं में समान शिक्षण–दक्षता पायी गयी। जिन बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता निम्न पायी गयी उनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं है। इसका सम्भावित कारण यह हो सकता है कि परम्परागत महाविद्यालयों के प्रशिक्षु प्रवेश प्रक्रिया के समय मैरिट में उच्च स्थान प्राप्त करते हैं तथा दूरस्थ शिक्षा महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षु परम्परागत शिक्षा महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की अपेक्षा निम्न स्थान प्राप्त करते हैं। फलस्वरूप शोध अध्ययन के दौरान परिणाम भी यही दर्शाते हैं कि परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता में अन्तर होता है तथा यह अन्तर स्वाभाविक भी है। बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता में अन्तर न होने का सम्भावित कारण यह हो सकता है कि बी.एड. प्रशिक्षु ही भविष्य में शिक्षक बनते हैं, शिक्षक बनने की ललक उन्हें उच्च शिक्षण दक्षता के लिए प्रेरित करती है। बी.एड. प्रशिक्षु अपनी हर परिस्थिति का सामना करते हुए अपनी शिक्षण दक्षता को बढ़ाने का भरसक प्रयास करते हैं चाहे उनके अन्दर जैसी भी समायोजन क्षमता जैसी भी परिस्थितियाँ आयें।

निष्कर्ष एवं विवेचन

उपरोक्त उपलब्धियों के आधर पर निष्कर्षात्मक रूप से कहा जा सकता है कि–

1. परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता में अन्तर होता है।
2. परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की समायोजन क्षमता में कोई अन्तर नहीं होता है।
3. परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा वाले बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन का शैक्षिक महत्व

प्रस्तुत शोध पत्र के परिणाम शिक्षक एवं शिक्षार्थी के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। यह सर्वविदित है कि आज के बी.एड. प्रशिक्षु ही भावी शिक्षक बनेंगे। वर्तमान परिवर्तनशील परिप्रेक्ष्य में अध्कि शिक्षण दक्षता वाले कि बी.एड. प्रशिक्षुओं का निर्माण कर उच्च शिक्षण दक्षता वाले भविष्य के राष्ट्र निर्माताओं (शिक्षकों) का निर्माण किया जा सकता है। नीतू जायसवाल (2010) ने भी अपने शोध परिणामों के आधर पर पाया कि बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता का उनके समायोजन क्षमता पर कोई प्रभाव नहीं पडता है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षक की शिक्षण दक्षता पर किसी भी बाह्य कारक का प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः शिक्षण संस्थाओं के शिक्षकों एवं बी.एड. प्रशिक्षुओं को यह सुझाव दिया जा सकता है कि वे अपनी शिक्षण दक्षता को प्रभावशाली बनाने के लिए प्रयासरत रहें।

शिक्षण प्रक्रिया का एक आधर तत्व शिक्षक होता है, जिसके ऊपर शिक्षा का ऐसा दायित्व है जो उसके अन्दर कई योग्यताओं से समन्वित होने की आकांक्षा रखता है। स्थायी, ईमानदार, अनुशासित, नेतृत्व क्षमता, पूर्ण जिज्ञासु व स्व आश्रित गुणों को समाहित कर एक आदर्श शिक्षक बन सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त परिणाम परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। शिक्षक शिक्षण के लिए उपयुक्त वातावरण का सृजन करता है जिससे बालक अपनी प्रतिभा एवं क्षमता का समुचित प्रयोग कर सके। कक्षा शिक्षण के लिए उपयुक्त वातावरण तभी निर्मित हो सकता है जब शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय रूप से अपना योगदान दें अर्थात् जब शिक्षक दक्षता प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरित होगा एवं अपने कार्य में पूरी तरह संलग्न रहेगा, तभी वह शिक्षण को प्रभावशाली एवं उपयोगी बना सकेगा।

अतः एक शिक्षक को हमेशा अपने व्यवसाय व भविष्य के प्रति जागरूक रहना चाहिए ताकि वह आधुनिक समाज की शैक्षणिक आवश्यकताओं की आपूर्ति योग्य बन सके। इस अध्ययन के आधार पर शिक्षकों को यह परामर्श दिया जा सकता है कि उन्हें अपने ज्ञान व प्रशिक्षण को वर्तमान आवश्यकताओं, आशाओं, आकांक्षाओं एवं

निर्धरित मापदण्डों के अनुरूप रखना चाहिए। शिक्षक दक्षता में वृद्धि हेतु विषय विशेषज्ञों के व्याखान समय–समय पर हों तथा शैक्षिक सुविधाओं का विस्तार किया जाये, जैसे– मीडिया सेन्टर, स्टडी सेन्टर, हाइटैक लाइब्रेरी, साइबर जोन इनके प्रयोग हेतु शिक्षकों को प्रेरित किया जाये, साथ ही आवश्यकता अनुभव होने पर प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की जाये। शिक्षकों की योग्यता एवं प्रगति की जांच निरन्तर की जाये, इस हेतु सरकार द्वारा अनुवर्ती कार्यक्रम संचालित किये जायें, जिससे उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा और वह अपने ज्ञान को निरन्तर बढायेगें शिक्षण दक्षता हेतु संगोष्ठी, कार्यशाला, ऑरिएन्टेशन एवं रिफ्रेशर कोर्स की व्यवस्था द्वारा शिक्षकों को कलात्मकता के साथ वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग तथा छात्राों की व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखकर शिक्षण हेतु उपयुक्त विधि एवं कौशल के चयन हेतु प्रेरित किया जाये। सरकार/विद्यालय द्वारा शिक्षकों को शैक्षिक उन्नयन पर आधारित 'परियोजना कार्य' दिये जाने चाहिये।

प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक अपने कार्य को सही ढंग से निपटाते हैं जबकि प्रशिक्षण के दौरान कई विधियों/प्रविधियों को बतलाया जाता है परन्तु शिक्षक हो जाने के बाद वे केवल वेतनभोगी शिक्षक बन जाते हैं और सारा कौशल भूल जाते हैं। इसके भी कई कारण हो सकते हैं जिसका अध्ययन करके उसे दूर करने की कोशिश की जा सकती है जिससे भविष्य में शिक्षण दक्षतापूर्ण होगा। अतः विचार पूर्वक एक देश एक राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू करके, राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षण दक्षता परीक्षा के माध्यम से योग्य, चरित्रावान एवं शिक्षण के प्रतिबद्ध उम्मीदवारों का चयन प्राथमिक, माध्यमिक एवं महाविद्यालय स्तर पर करके शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षित कराया जाये। ऐसे प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा ही सभी विद्यालयों में शिक्षण कार्य कराया जाये तभी शिक्षा व्यवस्था के तमाम दोष दूर होंगे एवं शिक्षण की गुणवत्ता भी बढ़ेगी और शिक्षक दक्षतापूर्ण शिक्षण कार्य कर सकेंगे। अतः यदि शिक्षण दक्षता की जाँच के द्वारा ऐसे शिक्षकों का चयन किया जाए जो शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर स्वस्थ हों, जिनमें उत्तम शिक्षण कार्य करने की इच्छा शक्ति हो, साथ ही न केवल अपने विषय बल्कि दूसरे विषयों का भी व्यावहारिक ज्ञान रखते हों। देश की प्रगति और उत्थान सच्चे कर्तव्यनिष्ठ शिक्षकों के हाथों में ही है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

सन्दर्भ सूची

1. सोनी, सुरेश (2014): शिक्षा और शिक्षकीय दायित्व, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
2. पांडेय, डॉ रामशकल (2012): उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. कुमार, डॉ. बृजेश (2022): अध्यापक शिक्षा के आयाम, बीएफसी पब्लिकेशन, लखनऊ उत्तर प्रदेश।
4. सिंह, डॉ. गंगा दास कुमार, डॉ. मुनेंद्र एवं चावला, डॉ. नीतू (2018): शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक, राजनीतिक–आर्थिक परिप्रेक्ष्य, ठाकुर पब्लिकेशन, लखनऊ।
5. पाल, हंसराज (2015) : उच्च शिक्षा में अध्यापन एवं प्रशिक्षण की प्रविधियां, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
6. माथुर, डॉ. एस. एस. (2009): शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
7. भटनागर, सुरेश (2008): शिक्षा अनुसंधान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, लायल बुक डिपो मेरठ।
8. गुप्ता, डॉ. एस.पी. (2003): शिक्षा मनोविज्ञान में आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
9. शर्मा, डॉ. आर. (2004): शिक्षा अनुसंधान, आर लाल बुक डिपो मेरठ।
10. भटनागर, डॉ. ए. बी. मीनाक्षी (2008): मनोविज्ञान व शिक्षा में मापन तथा मूल्यांकन, आर लाल बुक डिपो मेरठ।
11. गुप्ता, डॉ. एस. पी. (2015): उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
12. सिंह, अरुण कुमार (2013) : शिक्षा मनोविज्ञान भारती भवन पब्लिकेशन्स पटना।

13. सिंह, अरुण कुमार (2009): मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियों मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन्स नई दिल्ली।
14. चौधरी, इंगरसाल (2010): शिक्षक प्रशिक्षण में दक्षता संवर्धन, क्रियात्मक अनुसंधन की भूमिका, नई शिक्षा 58(6), 8
15. जायसवाल, नीतू (2010): बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण–अभिक्षमता का उनकी शिक्षण दक्षता के सम्बन्ध में तुलनात्मक अध्ययन एम.एड. डिजर्टेशन इलाहाबाद, इलाहाबाद विश्वविद्यालय पृष्ठ संख्या 1–9।
16. पाण्डेय, सुधांशु कुमार (2011): वित्तपोषित महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं के समायोजन का उनकी शिक्षण सक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन। भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष–30, अंक–1, जनवरी–जून 2011, पृष्ठ 63–69।
17. पासी, बी.के. एवं ललिथा, एम.एस. (1994): मेन्युल फोर जनरल टीचिंग कॉम्पीटेन्सी स्केल, एनपी. सी., कचहरी घाट, आगरा।
18. रेड्डी, भूम.एन. (1991) : आन्ध्र प्रदेश माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा अभिक्षमता का अध्ययन। पी0 एच0 डी0 एजूकेशन, असमिया यूनीवर्सिटी, फिफ्थ सर्वे, ऑफ एजूकेशनल एण्ड साइकोलॉजीकल रिसर्च, वॉल्यूम–2, पृष्ठ 1472।
19. मंगल, एस०के० (2012): शिक्षा मनोविज्ञान, PHI Learning Private Limited, New Delhi-

Cite this Article

"रीता यादव; डॉ. कमलेश कुमार यादव", "परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षित बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता, समायोजन क्षमता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन', ResearchPro International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:2, October-December 2025.

Journal URL- https://www.researchprojournal.com/

DOI- 10.70650/rpimj.2025v1i2000014